ISSN 0974-8857

तुलसी प्रज्ञा

TULSÍ PRAJÑÁ

वर्ष 42 • अंक 167-168 • जुलाई-दिसम्बर 2015

A Peer Reviewed Research Quarterly

जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ - 341 306 (राजस्थान) भारत
JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE
Ladnun - 341 306, Rajasthan, India

Scanned with CamScanner

तुलसी प्रज्ञा ISSN 0974-8857

TULSI PRAJÑĀ

A Peer Reviewed Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

YEAR-42 VOL.-167-168 JULY-DECEMBER, 2015

Patron

Samani Charitraprajna
Vice-Chancellor

Editor

Prof. Anil Dhar

Assistant Editors

Dr. Samani Aagam prajna
Samani Vinay prajna

Managing Editor

Nepal Chand Gang

Editorial-Board

Prof. Mahavir Raj Gelra, Jaipur
Prof. Satya Ranjan Banerjee, Kolkata
Prof. Arun Kumar Mookerjee, Kolkata
Prof. Dayanand Bhargava, Jaipur
Prof. Frank Van Den Bossche, Belgium
Prof. Bachh Raj Dugar, Ladnun
Prof. Damodar Shastri, Ladnun
Prof. Sushma Singhwi, Jaipur
Prof. K.T.S. Sarao

Website : jvbi.ac.in, E-mail : tulsiprajnarj@gmail.com, anljvbi@gmail.com

Publisher :
Jain Vishva Bharati Institute
Ladnun-341306, Rajasthan, India

Scanned with CamScanner

तुलसी प्रज्ञा

ISSN 0974-8857

TULSI PRAJÑĀ

A Peer Reviewed Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

YEAR-42 VOL.-167-168 JULY-DECEMBER, 2015

अनुक्रमणिका / CONTENT

ENGLISH SECTION

Subject	Author	Page No.
Ācārāṅga-Bhāṣyam	Ācārya Mahāprajña	05-08
Non-violence: It's Different Aspects	Prof. B.R. Dugar	09-20
Tragedies in Sanskrit (Literature) Dramas: A Resume	Dr Chandramouli S. Naikar	21-26
Health and Happiness in Jainism	Dr. Samani Rohit Pragya	27-37
Use and Evolution of Languages in Jain Literature	Abhishek Jain	38-48
Veganism with Jainism : A Better Life for Everyone	Gabrial Mc Carty	49-62

हिन्दी खण्ड

विषय	लेखक	पृ. संख्या
उमास्वति और उनका तत्त्वार्थसूत्र	प्रो. सागरमल जैन	63-72
समाधिमरण के वैदिक पुराणगत उल्लेख	प्रो. दामोदर शास्त्री	73-83
तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक में निर्विकल्पक प्रत्यक्ष एवं स्वसंवेदन प्रत्यक्ष	प्रो. धर्मचन्द जैन	84-95
अहिंसा का आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक पक्ष : आचाराङ्ग के परिप्रेक्ष्य में	डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा	96-109
शिक्षा के विकास में सम्यग् दर्शन की भूमिका : एक अध्ययन	डॉ. गिरधारीलाल शर्मा	110-114
आचार्य कुन्दकुन्द के आधार पर निश्चय और व्यवहार नय की समीक्षा	डॉ. आलोक कुमार जैन	115-125

Scanned with CamScanner

समाधिमरण के वैदिक पुराणगत उल्लेख

प्रो. दामोदर शास्त्री

उत्कृष्ट संयम व तपस्या के धनी प्राचीन ऋषियों-मुनियों एवं महापुरुषों के उदात्त चिन्तन-मनन व देशना के फलस्वरूप, भारतीय संस्कृति की विचारधारा प्रवहमान होती हुई भारतीय जन-मानस रूपी उर्वरा भूमि को सिंचित व पावन करती रही है। इस संस्कृति ने ही मानव-जाति के लिए आत्मिक अभ्युदय व निःश्रेयस का मार्ग प्रशस्त किया है। सज्ज्ञान व सदाचार की जो अमूल्य निधि भारतीय संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ आदर्श के रूप में सुरक्षित है, उनके कारण भारतवर्ष समस्त मानव-जाति के लिए एक विश्वगुरु के रूप में प्रतिष्ठित रहा है। भारतवर्ष के इसी बौद्धिक व चारित्रिक उत्कर्ष को रेखांकित करते हुए मनु ने मनुस्मृति में निम्नलिखित उद्‌गार व्यक्त किया है-

एतद्देशप्रसूतस्य, सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्, पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

(मनु. 2/20)

इस भारतीय संस्कृति की अजस्र धारा प्रमुखतः दो धाराओं में विभक्त होकर प्रवाहित हुई है। वे हैं- वैदिक व श्रमण। जैन परम्परा श्रमण संस्कृति का ही प्रमुखतः प्रतिनिधित्व करती है।

द्विविध संस्कृतियों का संगम-स्थल 'भारतवर्ष'

उक्त दोनों (वैदिक व जैन) परम्पराएं मौलिक व दार्शनिक दृष्टि से परस्पर पूर्णतः भिन्न हैं, कुछ दृष्टियों से विरुद्ध भी हैं। गंगा व यमुना की तरह दोनों अपना स्वतंत्र अस्तित्व व वैशिष्ट्य रखती हैं। उक्त मौलिक भेद को संक्षेप में कहा जाय तो वैदिक परम्परा 'वेद' को प्रमाण मानती है, ईश्वर को सृष्टिकर्ता मानती है, विविध अवतारों के रूप में धर्म-रक्षार्थ परमात्मा के पृथ्वी पर अवतरण होने का, उन अवतारों

Scanned with CamScanner